अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 16 फरवरी 2019

आतंकवाद शांति और सुरक्षा, समृद्धि और लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है...
...बान की मून, *संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव*

घाटी में सुरक्षा बलों को निशाना बनाकर किए भीषणतम हमले के बाद सरकार का पाकिस्तान के खिलाफ सख्त रुख स्वाभाविक है, अलबत्ता इसके साथ-साथ सुरक्षा के मोर्चे पर सतर्कता बरतने की भी आवश्यकता है।

सख्ती और सतर्कता

कश्मीर घाटी में सुरक्षा बलों को निशाना बनाकर किए गए भीषणतम हमले के बाद सरकार ने पाकिस्तान के प्रति जैसी सख्ती और गंभीरता का परिचय दिया है, वह स्वभाविक ही है। सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी की बैठक में उसने पाकिस्तान से सबसे वरीयता प्राप्त देश का दर्जा वापस ले लिया है, जो उसने उसे 1996 में दिया था। उसने पाकिस्तानी उच्चायुक्त को बुलाकर पुलवामा हमले पर कड़ा विरोध दर्ज करते हुए पाकिस्तान स्थित भारतीय उच्चायुक्त को दिल्ली बुला लिया है तथा करतारपुर कॉरिडोर पर बातचीत बंद करने का भी संकेत दिया है। सरकार ने इस हमले के बाद पहली बार सर्वदलीय बैठक भी बुलाई है। पुलवामा हमले को अंजाम देने वाले जैश के सरगना मसूद अजहर को अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी घोषित करने के भारत के प्रयास पर चीन ने हालांकि फिर अड़ंगा लगाया है, इसके बावजूद सरकार ने पाकिस्तान की कूटनीतिक घेरेबंदी की कोशिशें भी तेज कर दी हैं। इसके साथ-साथ सुरक्षा के मोर्चे पर हमें ज्यादा सतर्क रहने की भी जरूरत है। घाटी में जैश के आत्मघाती हमले की पूर्व सूचना को अगर गंभीरता से लिया गया होता, तो संभवतः इस त्रासदी को टाला जा सकता था। सुरक्षा बलों के काफिले के साथ नागरिक वाहनों को चलने देने की छूट कुछ साल पहले ही शुरू की गई थी, लेकिन सैकड़ों किलो विस्फोटकों से लदी कार अचानक हाइवे पर सुरक्षा बलों के वाहनों से जिस तरह टकरा गई, वह सुरक्षा के साथ-साथ खुफिया मोर्चे पर भी बड़ी चूक है। कश्मीर में सीआरपीएफ की ओर से लंबे समय से बुलेटप्रूफ वाहनों की मांग की जा रही है। वहां सैनिकों और अर्धसैनिक बल के जवानों को सड़कों के रास्ते लंबे समय तक लाने-ले जाने के बजाय विमानों से लाने-ले जाने के सुझाव भी दिए जा चुके हैं। इन सभी पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। जम्मू-कश्मीर के

हालात सरकार से बेहद संवेदनशील तरीका अख्तियार करने की भी मांग करते हैं, ताकि ग्रेनेड फेंकने वाले और पत्थर फेंकने वाले हाथ में फर्क किया जा सके। तभी घाटी के युवाओं को आतंक के रास्ते में जाने से रोका जा सकेगा। पुलवामा हमले के विरोध में जम्मू में फैली हिंसा भी उतनी ही चिंताजनक है। पाकिस्तान को सबक सिखाते हुए सुरक्षा के मोर्चे पर सख्ती बरतने तथा देश में शांति और स्थिरता का माहौल बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है।

जल्दबाजी की जरूरत नहीं

पुलवामा में हुए आतंकी हमले के खिलाफ सरकार से कठोर कार्रवाई की अपेक्षा स्वाभाविक है। लेकिन एक परिपक्व सरकार सभी विकल्पों को तौलने के बाद अपने चुने हुए समय और स्थान पर पूरी तैयारी के साथ कार्रवाई करती है, जब सफलता सुनिश्चित होती है।

वेलेंटाइन डे को पुलवामा जिले में सीआरपीएफ जवानों को ले जा रही बस पर फिदायीन हमला हाल के समय का सबसे बड़ा आतंकवादी आक्रमण है। बेशक यह बेहद दुखद घटना है, लेकिन यह कई पहलुओं को खोलती है, जो विश्लेषण की मांग करते हैं।

पहला तो यही कि इतना बड़ा काफिला कभी भी अलक्षित नहीं हो सकता। जाहिर है, इसकी खबर फैल गई होगी। इसने आतंकी समूहों को आत्मघाती वाहन और हमलावर के चयन का मौका दे दिया होगा, जिसका वीडियो हमले के तुरंत बाद जारी किया गया। जाहिर है, यह हमला सुनियोजित था। आखिरकार विस्फोटकों से लदे एक वाहन को कम समय में तैयार नहीं किया जा सकता। इसलिए सीआरपीएफ की आसन्न गतिविधि की जानकारी लीक होने की पूरी आशंका है, जिसकी पड़ताल की जानी चाहिए। इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक प्राप्त करने की आतंकियों की क्षमता की भी जांच होनी चाहिए। यह या तो नियंत्रण रेखा के माध्यम से सीमा पार से खरीदा गया होगा या उन संगठनों से हासिल किया गया होगा, जो इसका काम करते हैं। किसी भी मामले में इसकी जांच करने और खामियों को दूर करने की जरूरत है।

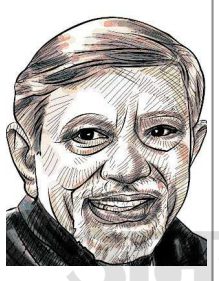

हर्ष कक्कड़
सेवानिवृत्त मेजर जनरल

दूसरी बात यह है कि तमाम सुरक्षा इंतजामों के बावजूद ऐसा हुआ। ऐसे काफिले केवल एक बार सड़क खुलने के दौरान और अपनी सुरक्षा में आगे बढ़ते हैं। सड़क पर आने वाले वाहनों की जांच की जाती है, फिर भी विस्फोटक लदा वह वाहन अंदर घुसने में कैसे कामयाब रहा? इस पर चिंतन-मनन और विश्लेषण करने की आवश्यकता होगी। इससे संकेत मिलता है कि आतंकियों ने इलाके का सर्वे किया और व्यवस्था की खामियों का उन्हें पता था, जिसका उन्होंने फायदा उठाया। हमले के साथ-साथ वाहनों पर गोलीबारी से पता चलता है कि आतंकवादियों ने सही समय पर अपने खुफिया तंत्र का संचालन किया था, जो सुरक्षा बलों की गतिविधियों से संबंधित जानकारियों के लीक होने की पुष्टि करता है। तीसरा मुद्दा यह है कि अपने आपमें यह

आत्मघाती हमला ही है। सुरक्षा बलों के शिविरों पर अब तक जो आत्मघाती हमले हुए हैं, उनमें हमलावर ज्यादातर पाक नागरिक रहे हैं। शायद ही कभी कोई कश्मीरी उसमें शामिल रहा हो। यह हमला घाटी में आतंकवाद के पैटर्न में बदलाव का संकेत दे सकता है, इसलिए सुरक्षा बलों को अपनी मौजूदा रणनीति में बदलाव की आवश्यकता हो सकती है। ऐसी खबरें हैं कि आतंकवादियों को अफगानिस्तान में प्रशिक्षण दिया गया, जो एक चिंताजनक पहलू है।

चौथा मुद्दा हमले के समय से जुड़ा है। चूंकि लोकसभा का चुनाव करीब है, यह हमला भाजपा की छवि को धूमिल कर सकता है, जो कुछ समय पहले तक पाकिस्तान पर अपनी सर्जिकल स्ट्राइक की सफलता और आतंकी घटनाओं पर रोक का दावा कर रही थी। अगर राजनीतिक दलों में पर्याप्त परिपक्वता होगी, तो इस घटना को चुनाव में मुद्दा नहीं बनना चाहिए। हालांकि, भारतीय राजनीतिक प्रणाली को जानने के बाद कोई भी विरोधी दल सरकार को तुरंत चुनौती नहीं देगा, क्योंकि यह भारतीय भावना की अनदेखी करने जैसा होगा। लेकिन कुछ समय बाद वे सरकार की कश्मीर और पाकिस्तान नीति पर सवाल उठा सकते हैं।

पाकिस्तान स्थित जैश-ए मोहम्मद ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। उसने अपनी सेना के निर्देश पर ऐसा किया होगा, जिसका उद्देश्य गुप्त होगा। मुख्य रूप से उसने मौजूदा राजनीतिक माहौल को प्रभावित करने और स्थानीय आतंकियों की शिथिलता दूर करने के लिए ऐसा किया होगा।

जैसा कि प्रधानमंत्री ने संसद में अपने अंतिम भाषण में कहा कि एक ही पार्टी की बहुमत के सरकार के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का सम्मान किया जाता है, जिसने राष्ट्र को निर्णायक रूप से कार्य करने की ताकत दी। इसलिए पाकिस्तान भारत में एक मजबूत पार्टी की सरकार के बजाय एक कमजोर गठबंधन की सरकार चाहता होगा। इससे उसे अधिक छूट पाने और अपनी शर्तों पर भारत को वार्ता में शामिल करने का मौका मिल सकता है। पर उसे कामयाब नहीं होने दिया जा सकता।

अगला पहलू घाटी में अलगाववादियों का रवैया है। सुरक्षा बलों ने जान गंवाई है और यह राष्ट्र के लिए त्रासदी है। दुख के इस क्षण में भी आतंकवादियों की आलोचना करने से इनकार करना, चुप्पी बनाए रखना और सुरक्षा बलों पर दूसरों की भावनाओं को समझे बिना ताकत का इस्तेमाल करने का आरोप लगाना राष्ट्र-द्रोह के समान है। सीआरपीएफ के काफिले पर हमले के राष्ट्रीय निहितार्थ हैं। चूंकि सीआरपीएरफ की भर्ती राष्ट्रीय स्तर पर होती है, इसलिए देश भर में शोक की लहर होगी, क्योंकि जिन लोगों ने अपनी जान गंवाई है या घायल हुए हैं, वे देश के लगभग सभी राज्यों से होंगे। इसके राजनीतिक निहितार्थ भी होंगे।

इससे इनकार नहीं कि अधिकांश आतंकी समूह सुरक्षा बलों की कठोर कार्रवाई से प्रभावित हुए हैं। हालांकि उन्हें खत्म नहीं किया जा सका है। यह आतंकी हमला अपने चुने हुए स्थान पर हमला करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। ऐसे हमले से उनका मनोबल बढ़ेगा और संभवतः भर्ती भी बढ़ेगी। आतंकवादी उम्मीद करते होंगे कि सुरक्षा बल स्थानीय आबादी के साथ निर्मम होंगे और उन पर संदेह करेंगे। पर ऐसी कार्रवाई दीर्घ काल के लिए नुकसानदेह होगी, इसलिए सुरक्षा बलों को सुनिश्चित करना होगा कि स्थानीय लोगों के प्रति उनका रवैया न बदले। उन्हें पहले की तरह ही आतंकियों पर हमला और उनके नेतृत्व को खत्म करना चाहिए।

पूरे देश से बदला लेने की मांग उठेगी। सरकार भी जानती है कि उसे कार्रवाई करनी चाहिए, क्योंकि हमले का समय चुनावों के करीब है। सर्जिकल स्ट्राइक के प्रचार से संकेत मिलता है कि राष्ट्र एक कठोर प्रतिक्रिया की उम्मीद करेगा। बेशक पाकिस्तान के खिलाफ सरकार को कूटनीतिक कार्रवाई जारी रखनी चाहिए, पर अपने विकल्पों और कार्रवाई पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए। जल्दबाजी में जवाब देने की जरूरत नहीं है। एक परिपक्व सरकार सभी विकल्पों को तौलने के बाद अपने चुने हुए समय और स्थान पर तैयारी के साथ कार्रवाई करती है, जब सफलता सुनिश्चित होती है। वह कभी दबाव और अल्पकालिक नतीजे के लिए काम नहीं करती। सरकार का इरादा एक संदेश देना, निडरता पैदा करना और राष्ट्रीय आत्मविश्वास का निर्माण होना चाहिए। संदेश यह भी होना चाहिए कि ऐसी कार्रवाइयां भारत को प्रभावित नहीं कर सकती हैं।

दर्द ने मुझे शांति के मूल्यों से वाकिफ कराया

अपनी कहानी

>> फान थी किम फुक

लोगों की नजर में बारूदों के अवशेषों ने मुझे जहरीला बना दिया था। लेकिन अब मैं न सिर्फ जी रही हूं, बल्कि अपने अनुभव से मैंने सीख ली है। अपमान, दर्द और तकलीफ से निकलने का रास्ता पाया है। मेरा जीवन अब उम्मीद, प्यार और क्षमा से भरा है।

मैं नौ साल की थी। तन पर एक धागा तक नहीं था। मैं सड़क पर चीखते हुए दौड़ रही थी और मेरे पीछे थे बंदूकधारी सैनिक। युद्ध के खौफ में मैं बस रोए जा रही थी। बारूद के गुबारों में दर्द के सिवा और कुछ नहीं था। इन्हीं ब्योरों वाली मेरी तस्वीर लोगों ने हजारों मर्तबा देखी है। वीभत्स वियतनाम युद्ध की उस तस्वीर ने मेरी जिंदगी निर्धारित कर दी। मेरा जन्म वियतनाम की राजधानी से बमुश्किल तीस मिनट की दूरी पर स्थित एक गांव में हुआ था।

आसमान से मौत बरस रही थी

वियतनाम-अमेरिका युद्ध के दौरान मुख्य रणनीतिक रास्ता मेरे गांव को छूता था। आठ जून, 1972 को अमेरिकी हमले में मेरा गांव तबाह हो गया था। मेरे दो चचेरे भाई-बहन मारे गए और मैं बुरी तरह जख्मी हो गई थी। मेरी चर्चित फोटो उसी हमले के दौरान की है। युद्ध रिपोर्टर निक उट ने ही अस्पताल ले जाकर मेरी जान बचाई थी। हालांकि तब मैं जीना नहीं चाहती थी। उस भयानक त्रासदी के दस साल बाद दुनिया को मेरे बारे में पता चला, तो मुझ पर सवालों के हमले होने लगे। मजबूरन मुझे अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी। हालांकि चार साल बाद मुझे क्यूबा जाकर पढ़ाई करने का मौका मिला। 1992 में शादी करने के कुछ वक्त बाद मैं कनाडा में रहने लगी।

गर्म हवाएं और मेरी जली त्वचा

बचपन में मैं वियतनाम के काओ दाई धर्म से जुड़ी थी। मेरे दादा-दादी हमारे समुदाय के सम्मानित धार्मिक नेता थे। हर कोई उनकी कद्र करता था। मां-बाप ने भी उन्हीं का अनुसरण करते हुए मेरी पीढ़ी को सभी धार्मिक शिक्षाएं दी थीं। शांति के लिए लंबे वक्त तक मैंने ऊपर वाले से प्रार्थनाएं कीं। लेकिन मेरी प्रार्थनाओं का कोई जवाब मुझे मिला नहीं। मुझे यकीन हो चला कि ऊपर वाले को हमारी कोई परवाह नहीं है। इन सबके इतर युद्ध की वजह से मेरे शरीर पर पड़े निशान और गहरे होते जा रहे थे। वियतनाम की गर्म और रूखी हवाएं मेरी जली त्वचा को और ज्यादा तकलीफ दे रही थी।

बरसों अकेलापन झेला है

एक इंसान जितना अकेला हो सकता है, मैंने उतना ही अकेलापन झेला है। लंबे वक्त तक मेरा कोई दोस्त नहीं था। लोगों की नजर में बारूदों के अवशेषों ने मुझे जहरीला बना दिया था। इतने कटु अनुभवों के बावजूद मैंने हमेशा अपने दुश्मनों के लिए प्रार्थना की है। मैं तो ईश्वर की आभारी हूं कि उसने मुझे दुख सहना सिखाया है। मैं इसलिए भी खुश हूं कि दर्द ने मुझे शांति के असल मूल्यों से वाकिफ कराया। यही वजह है कि 1997 में मुझे यूनेस्को ने शांति के लिए अपना सद्भावना दूत नियुक्त किया था।

बस और युद्ध नहीं

मैं नई पीढ़ी को सलाह देना चाहती हूं कि प्रेम और क्षमा जैसे गुणों के साथ जीने में ही असली मजा है। मैं मानती हूं कि दुनिया का भला करने के लिए आपकी एक छोटी-सी दुआ का भी महत्व है। लोगों को मेरे उदाहरण से समझना चाहिए कि यदि एक बच्ची ऐसा कर सकती है, तो और कोई क्यों नहीं! बस और युद्ध न हो, कहीं भी न हो, किसी भी वजह से न हो, मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई खुशी नहीं।

-हाल ही में ड्रेसडेन शांति पुरस्कार से नवाजी गईं नापाम गर्ल के नाम से मशहूर किम के साक्षात्कारों पर आधारित।

फैक्ट फाइल

मोस्ट फेवर्ड नेशन

>> भारत-पाक सीमा

मोस्ट फेवर्ड नेशन दर्जे की शुरुआत 11वीं सदी के आसपास से मानी जाती है।

जम्मू-कश्मीर के अवंतीपुरा में भीषण आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान को दिया मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएनएफ) का दर्जा वापस ले लिया है। भारत ने 1996 में पाकिस्तान को यह दर्जा दिया था। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सदस्य देश संगठन के किसी अन्य देश को द्विपक्षीय संबंधों के आधार पर यह दर्जा देते हैं। इससे व्यापार में उस देश को अधिक प्राथमिकता दी जाती है और दर्जा प्राप्त देश कम आयात शुल्क पर कारोबार करता है। यह गैर भेदभाव वाली व्यापार नीति है। मोस्ट फेवर्ड नेशन दर्जे की शुरुआत 11वीं सदी के आसपास से मानी जाती है, जब समुद्री रास्ते से कारोबार में किसी देश को तरजीह दी जाती थी। 1667 में मैड्रिड की संधि के जरिये स्पेन ने ब्रिटेन को मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा दिया था। इसी तरह से 1794 में अमेरिका ने ब्रिटेन को यह दर्जा दिया। दूसरे विश्व युद्ध के बाद 1948 में विभिन्न देशों के बीच व्यापार संबंधी वार्ता के लिए जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफ ऐंड ट्रेड (गैट) अस्तित्व में आया। गैट विभिन्न देशों के बीच एक व्यापार संबंधी कानूनी समझौता था। गैट के पहले अनुच्छेद में यह स्पष्ट था कि यदि कोई देश किसी देश को एमएफएन का दर्जा देता है, तो वह उस देश को व्यापार समझौतों में रियायतें और विशेष सुविधाएं देगा। जनवरी, 1995 में गैट को भंग कर उसकी जगह विश्व व्यापार संगठन की स्थापना की गई। इसकी स्थापना 124 देशों की सहमति से की गई थी।

मिस्र में 2034 तक अल सिसी

मिस्र की संसद ने संविधान संशोधन को मंजूरी दी, जिसके तहत अल सिसी 2034 तक सत्ता में बने रहेंगे।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए डेक्लैन वाल्श

मिस्र की संसद ने बृहस्पतिवार को संविधान संशोधन को मंजूरी दी, जिसके तहत राष्ट्रपति अब्देल फतेह अल सिसी की सत्ता 2034 तक बढ़ा दी गई है। यह जहां उनके तानाशाही शासन को मजबूत करता है, वहीं देश में सैन्य शासन को वर्चस्व प्रदान करने वाला भी है। यह बदलाव औपचारिक तौर पर उन घटनाक्रमों को सही ठहराता है, मिस्र के अनेक लोग 2011 से ही जिसके गवाह थे। तब मिस्र में विरोध प्रदर्शनों ने राष्ट्रपति होस्नी मुबारक को सत्ता से बाहर कर दिया गया, और उसकी जगह उससे भी मजबूत एक व्यक्ति को सत्ता मिली, जो दशकों तक, और शायद जीवन भर सत्ता में बने रहना चाहता है।

दरअसल अमेरिका ने बिना सवाल किए अल सिसी का जिस तरह समर्थन किया-राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उन्हें 'शानदार आदमी' कहा-उसने भी मिस्र के इस नेता को निडर होकर आगे बढ़ने का साहस दिया है। निर्वासित विपक्षी राजनेता मोहम्मद अलबरदेई ने पिछले सप्ताह ट्वीट किया, 'अरब वसंत उल्टी दिशा में!' गौरतलब है कि अलबरदेई ने 2013 में तब उप-राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया था, जब अल सिसी

के सुरक्षा जवानों ने 800 से अधिक विरोधियों की हत्या की थी। दुकानदार डेनियल कहते हैं, सिसी किसी भी तरह सत्ता से चिपके रहना चाहते हैं।

संविधान में इन प्रस्तावित बदलावों का अर्थ यह होगा कि सिसी, जिनका 2022 में सत्ता से बाहर होना तय था, छह-छह साल के दो और कार्यकाल पूरे करेंगे तथा उन सांविधानिक मानकों को ध्वस्त कर देंगे, जिन्हें सत्ता में आने के एक साल बाद 2014 में उन्होंने लागू किया था। अल सिसी के पास जजों तथा महा अभियोजक को नियुक्त करने का अधिकार होगा, जबकि शीर्ष न्यायपालिका से कानूनी मसौदों को मंजूरी देने का अधिकार छीन लिया जाएगा। मिस्र के 10 मानवाधिकार समूहों ने चेतावनी दी है कि ये प्रस्तावित सांविधानिक बदलाव अल सिसी को आजीवन सत्ता में रहने का हक तथा अभूतपूर्व एकतरफा अधिकार देंगे। ज्यादा समय नहीं हुए, जब अल सिसी ने वायदा किया था कि वह अपना कार्यकाल बढ़ाने की कोशिश नहीं करेंगे। नवंबर, 2017 में उन्होंने *सीएनबीसी* से कहा था कि हम बेवजह हस्तक्षेप नहीं करेंगे। तब उन्होंने संविधान का हवाला देते हुए चार-चार साल के दो कार्यकाल पर अमल करने की बात कही थी। लेकिन उसके कुछ ही महीने बाद विवादास्पद राष्ट्रपति चुनाव में 97 फीसदी वोट पाने के बाद सिसी के समर्थकों ने संविधान संशोधन की बातें शुरू कर दी थीं।

मानवाधिकार हनन की घटनाओं के बावजूद पश्चिम तथा अरब के नेता सिसी को इस्लामी आतंकवाद के खिलाफ मजबूत शख्सीयत मानते हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोम्पेओ ने पिछले महीने अपनी काहिरा यात्रा में सिसी की तारीफों के पुल बांध दिए थे। हाल के महीनों में मिस्र की तीन बड़ी सुरक्षा सेवाओं में से एक जनरल इंटेलीजेंस सर्विस की रोज बैठक होती थी, जिसमें अल सिसी का कार्यकाल बढ़ाने पर विचार होता था। उन बैठकों की अध्यक्षता सिसी के बेटे महमूद अल सिसी करते थे, जो जनरल इंटेलीजेंस सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी हैं।

इस हफ्ते के शब्द

अंकिती बोस

सत्ताइस साल की अंकिती बोस की कंपनी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म जिलिंगो को 'यूनिकॉर्न' स्टेटस मिलने वाला है।

ब्लॉकचेन (BLOCKCHAIN)

को एक सर्वे में 2018 का सबसे ओवररेटेड शब्द पाया गया है। इस शब्द ने सर्वेक्षण में 'एआई' और 'प्रोग्रामैटिक' जैसे शब्दों को पीछे छोड़ा।

युवा देश-युवा वोटर

4.5 करोड़

के आसपास नए मतदाता होंगे आगामी लोकसभा चुनाव में वोट देने के काबिल, चुनाव आयोग के 2018 के आंकड़ों के मुताबिक।

सूत्र

>> एस्टी लॉउडर

रसोई घर से भी हो सकती है बड़ी शुरुआत

मेरा जन्म हंगेरियन यहूदी प्रवासियों के परिवार में कोरोना, क्वींस, न्यूयॉर्क में 1908 में हुआ था। मेरे पिता की क्वींस में एक हार्डवेयर की दुकान थी। मेरी मां बहुत ही खूबसूरत थी और बचपन से ही मैं उनके जैसा दिखना चाहती थी। मेरे व्यक्तित्व पर मेरे पिता का काफी प्रभाव पड़ा। बचपन से ही उनके साथ दुकान पर काम करते हुए मैंने चीजों को बेचने की कला सीखी।

वर्ष 1914 में मैंने अपने चाचा के साथ काफी समय बिताया और चाचा के सान्निध्य ने मेरी जिंदगी बदल दी। मेरे चाचा एक रसायनज्ञ थे, जिन्होंने त्वचा की क्रीम के लिए चार गुप्त फार्मूला तैयार किया। मैं उनके द्वारा तैयार क्रीम को अपने दोस्तों के बीच बेच देती थी। चूंकि मैं देखने में अच्छी थी और मेरी त्वचा साफ व मुलायम थी, जिससे मुझे क्रीम का विज्ञापन करने में मदद मिली। और इस तरह से एक अप्रवासी लड़की से मैं एक व्यवसायी महिला बन गई। मेरा मानना है कि हम सबके पास असीमित क्षमता होती है और सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने सपनों के लिए किस तरह से काम करते हैं। 1930 में मैंने एक एकाउंटेंट से शादी की और हमारी पहली संतान का जन्म 1933 में हुआ। क्रीम बेचकर मैंने जो पैसे अर्जित किए थे, उससे मैंने एक कंपनी की शुरुआत की। मेरे उत्पादों की गुणवत्ता बहुत अच्छी थी, लेकिन कोई नहीं जानता था कि मैं रात को अपने छोटे-से रसोई घर में उन्हें बनाती थी। शुरू से मेरे लक्ष्य स्पष्ट और सरल थे-एक महिला के पास अपने सौंदर्य के लिए बहुत कम समय होता है, उसी दौरान उसकी त्वचा जवान और दीप्तिमान होनी चाहिए। इसलिए 'त्वरित और प्रभावी' की मेरी अवधारणा शानदार थी।

अपने व्यवसाय पर पूरी तरह ध्यान देने के कारण मेरा परिवार टूट गया और मैं अपने बेटे के साथ मियामी बीच चली गई, जहां मैंने एक कार्यालय खोला। अपने करिअर में आगे बढ़ते हुए मैंने विशिष्ट लोगों के पैसे और प्रभाव का इस्तेमाल किया। 1942 में जब मेरा बेटा गंभीर रूप से बीमार पड़ गया, तो फिर मैं अपने पूर्व पति से मिली और हमने फिर से शादी कर ली। फिर हमने साथ मिलकर काम करना शुरू कर दिया और एस्टी लॉउडर कॉस्मेटिक का साम्राज्य खड़ा किया। मुफ्त सैंपल बांटने का मेरा आइडिया भी काम कर गया, क्योंकि जो महिला मुफ्त सैंपल के लिए आती थी, वह और भी उत्पादों की खरीदारी करती थी।

सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने सपनों के लिए किस तरह से काम करते हैं।